





# अभिमत



## जलस्रोतों का पुनर्जीवन

जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का कार्य काफी पहले किया जाना चाहिए था, फिर भी 'देर आयद, दुर्लक्ष आयद' कहावत के तहत यदि काम को सही तरीके से किया जाये तो आगे वाले कुछ वर्षों में भीषण जल संकट से बचा जा सकता है। जल स्रोतों को बचाने का कार्य जल्द शुरू होना चाहिए। समिति की रिपोर्ट मिलने के बाद कार्ययोजना को धरातल पर उतारने में देरी और रिपोर्ट फाइलों में कैद हो जाने से जल संकट और गहरा जायेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि मुख्य सचिव ने जल संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण कार्य के प्रति विभागीय संवादहीनता पर नाराजगी जाहिर की है और जल स्रोतों के पुनर्जीविकरण में लापतवाही बढ़ाश्त नहीं करने को कहा है।

जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। हिमालयी राज्य उत्तरांचल में नाले, धारे, झरने, गंधेरे और नदियों के पुनर्जीवन का मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। भूगोलीय जल की उपलब्धता और विध्युत की आंकलन करने तथा यैरिंग करने का आदेश उत्तरांचल की मुख्य सचिव राहुली ने दिया है। सिंगंग उंड रिवर रेजेवेशन अधिकारी (सारा) उच्चाधिकार प्राप्त समिति जलस्रोतों का सर्वेक्षण करेगी। जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का कार्य काफी पहले किया जाना चाहिए था, फिर भी 'देर आयद, दुर्लक्ष आयद' कहावत के तहत यदि काम को सही तरीके से किया जाये तो आगे वाले कुछ वर्षों में भीषण जल संकट से बचा जा सकता है। जल स्रोतों को बचाने का कार्य जल्द शुरू होना चाहिए। समिति की रिपोर्ट मिलने के बाद कार्ययोजना को धरातल पर उतारने में देरी और रिपोर्ट फाइलों में कैद हो जाने से जल संकट और गहरा जायेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि मुख्य सचिव ने जल संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण कार्य के प्रति विभागीय संवादहीनता पर नाराजगी जाहिर की है और जल स्रोतों के पुनर्जीविकरण में लापतवाही बढ़ाश्त नहीं करने को कहा है।

जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। हिमालयी राज्य उत्तरांचल में नाले, धारे, झरने, गंधेरे और नदियों के पुनर्जीवन का मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। भूगोलीय जल की उपलब्धता और विध्युत की आंकलन करने तथा यैरिंग करने का आदेश उत्तरांचल की मुख्य सचिव राहुली ने दिया है। सिंगंग उंड रिवर रेजेवेशन अधिकारी (सारा) उच्चाधिकार प्राप्त समिति जलस्रोतों का सर्वेक्षण करेगी। जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का कार्य काफी पहले किया जाना चाहिए था, फिर भी 'देर आयद, दुर्लक्ष आयद' कहावत के तहत यदि काम को सही तरीके से किया जाये तो आगे वाले कुछ वर्षों में भीषण जल संकट से बचा जा सकता है। जल स्रोतों को बचाने का कार्य जल्द शुरू होना चाहिए। समिति की रिपोर्ट मिलने के बाद कार्ययोजना को धरातल पर उतारने में देरी और रिपोर्ट फाइलों में कैद हो जाने से जल संकट और गहरा जायेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि मुख्य सचिव ने जल संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण कार्य के प्रति विभागीय संवादहीनता पर नाराजगी जाहिर की है और जल स्रोतों के पुनर्जीविकरण में लापतवाही बढ़ाश्त नहीं करने को कहा है।

